EK ONKAR

A BRIEF INTRODUCTION

NIRMAL DHAM

[A Stream of Multiple Charitable Services]

Model Town, Karnal (Haryana)

In the near past, a saintly personality of exceptional qualities sowed the seed of an amazing tree which has since flourished and bloomed into numerous branches, thus enriching and serving the society at large.

IN SERVICE OF HUMANITY
NIRMAL DHAM KARNAL

SANT NIKKA SINGH PUBLIC SCHOOL
Model Town

मानवता की निष्काम सेवा ही परम धर्म है

Oh God! bless us with strength to serve the needy & helpless

जिंदगी वही है जो दूसरों के काम आये

Bhagat Labha Mal Kartar Kaur Charitable Trust (Regd.)
Nirmal Dham, Model Town, Karnal-132001 (Haryana)
0184-4034915 9416259788, 9416566944, 8708853232
snspschool@yahoo.com www.bhagatlabhamalbridhashram.com

THE SCHOOL MANAGEMENT

Sant Nikka Singh Ji
'Virakat'

Sant Amrik Dev ji
Founder

Mahant Ram Singh ji
Patron

Sant Jodh Singh ji
Secretary

BOARD OF DIRECTORS (SNS Public Schools, Karnal)

Dr. S. N. Suri
Chairman

Dr. K. L. Dang
Director

S. Gurbinder Singh 'Nirmal'
Director

S. Kuldeep Singh Kalra
Director

THE MANAGERS

Mr. Rajesh Gupta
Sr. Administrative Manager

Mrs. Chanchal Khera
Manager Accounts

Mrs. Renu Suri
Convener

SCHOOL PRINCIPALS

Ms. Kavita Arora
(SNS Public School, Nirmal Dham)

Ms. Manju Yadav
(SNS Public School, Zarifa Farm)

Ms. Sonia Gaba
(SNS Public School, Sadar Bazar)

Ms. Sarika Taluja
(SNS ITI, Model Town)

निर्मल धामः एक परिचय

पूज्य संत निक्का सिंह 'विरक्त' जी महाराज

संत निक्का सिंह 'विरक्त' जी महाराज
(1894 - 1983 ई.)

निर्मले संतों की क्रमबद्ध श्रृंखला में महात्यागी, विरक्त शिरोमणी, महान विद्ववान, परोपकारी, गरीबों के हमदर्द, ब्रह्मज्ञानी, ब्रह्मनिष्ठ, ब्रह्मलीन श्रीमान् 108 संत बाबा निक्का सिंह 'विरक्त' जी हुए हैं। 'विरक्ती-ठाठ' में विचरते हुए उन्होंने सम्पूर्ण भारतवर्ष की पैदल यात्रा की। शरीर की प्रारब्ध अनुसार आपका आगमन दानवीर राजा कर्ण की पवित्र भूमि करनाल में हुआ। आप जी की दया, कृपा, मेहर की तरंगों का जिस भी जीव-प्राणी को स्पर्श हुआ, वह निहाल हो गया। आप की शरण में आये प्रत्येक प्राणी को आप जी ने सात्विक जीवन जीने का उपेदश दिया। आप जी ने बताया कि जीवन में सभी कार्यों को निष्काम एवं समर्पण भावना से करना चाहिए। सेवा, सिमरन एवं सत्संग आदि शुभ कर्म करते हुए जरूरतमंदों की निष्काम सेवा करना अति उत्तम कर्म बताया। ऐसे शुभ कार्य करने वाले प्राणीयों को प्रभू की प्राप्ति सहज ही हो जाती है। **गुरबाणी में फुरमान है:-**

सेवा करत होइ निहकामी।। तिस कउ होत परापति सुआमी।। (अंग 286)

ऐसे सत्संगी एवं भाग्यशाली प्राणीयों में **लभामल जी एवं उनकी धर्मपत्नी करतार कौर जी** का नाम वर्णन योग्य है। सन् 1947 ई. में जब भारत-पाकिस्तान का विभाजन हुआ तब श्री लभामल जी को परिवार सहित, जिला शेखुपुरा के गाँव 'कीले' में अपना घर, व्यापार एवं जमीन, जायदाद इत्यादि सभी कुछ छोड़ कर भारत आना पड़ा। पाकिस्तान में वह सभी सुख-साधनों युक्त जीवन बसर करते थे। भारत आने के बाद, गुरू कृपा एवं संतों के आशीर्वाद द्वारा अब फिर से, उनका जीवन खुशहाल होना शुरू हो गया। **गुरबाणी में दर्ज है:-**

जा तू मेरै वलि है ता किआ मुहछंदा।। तुधु सभु किछु मैनो सउपिआ जा तेरा बंदा।। (अंग 1096)

संयोगवश लभामल जी चावला एवं माता करतार कौर को पूज्य 'विरक्त' महाराज जी का संग प्राप्त होने लगा। संत महाराज जी की सेवा करते-करते, इस दंपत्ति को संत के संग का ऐसा रंग लगा कि उनके जीवन का लक्ष्य केवल मानवता की सेवा ही हो गया। उनकी अथक सेवा से प्रसन्न होकर, श्री संत बाबा निक्का सिंह 'विरक्त' जी, अपने सेवक को **'भगत'** शब्द से संबोधन करने लगे। भगत लभामल जी एवं माता करतार कौर जी सुबह-शाम निर्मल कुटिया में पहुँच कर अपने गुरू जी की तथा साध-संगत की हर प्रकार से निष्ठापूर्वक सेवा करते। पूज्य 'विरक्त' महाराज जी की सेवा का इस परिवार के सभी सदस्यों को इतना आशीर्वाद मिला कि शीघ्र ही सब खुशहाल हो गये। जो कोई भी माता-पिता स्वयं इतने कर्मठ हों तो उनके व्यक्तित्व का प्रभाव, उनकी संतान पर पड़ना स्वाभाविक ही होता है। परिवार के सभी सदस्य अपने गुरुदेव जी के प्रेम में रंगे रहने लगे। समय-समय पर निर्मल कुटिया जा कर महांपुरूषों के दर्शन, सत्संग एवं सेवा का लाभ लेते रहते। भगत लभामल जी के दूसरे सुपुत्र श्री अमरीक चन्द जी का हृदय, इस रूहानी प्रेम से अति अधिक प्रभावित हुआ।

श्री अमरीक चन्द चावला: सन् 1934 ई. में जिला शेखूपुरा (पाकिस्तान) के गाँव 'कीले' में जन्में अमरीक चन्द, रोजमर्रा की जिंदगी में कठिन परिस्थितियों का सामना करते हुए भी, एक सफल व्यापारी बने। श्री अमरीक चन्द जी ने कठिन जिंदगी की किसी भी परिस्थिती में गुरुभक्ति तथा गुरुसेवा में संभवत: कोई कमी नहीं आने दी। कारोबार में प्रगति करते हुए, उनकी आध्यात्मिक अवस्था भी अच्छी प्रतीत होने लगी। उनका मन महाराज के प्रति इतनी श्रद्धा और भावना से भरा रहता था कि संत जी के पवित्र मुख से निकला प्रत्येक शब्द, उनके लिए शुभाशीष ही होता था।

(1934 - 2016 ई.)

एक समय **संत निक्का सिंह 'विरक्त' महाराज जी** ने अमरीक चन्द जी के प्रति यह वचन किया कि **अमरीक साडा चिट्टे (सफेद) कपड़िआं विच संत है।** इसी तरह अमरीक जी के छोटे भ्राता श्री दर्शन लाल चावला के प्रति कहा करते थे कि **दरशन केवल साडा ही भगत है।** महाराज जी की असीम कृपा एवं उनकी प्रेरणा से ही अमरीक चन्द उर्फ **'बाऊ जी'** को जनता की सेवा व गरीबों का भला करने के विचार अत्यधिक आने लगे। अपने गुरू जी के प्रति अति श्रद्धा, निष्ठा व विश्वास के कारण, उन्होंने अपने मन में गरीबों की सेवा तन, मन, धन से करने का निर्णय कर लिया। इस शुभ निर्णय को मूर्तिमान करने के लिए सन् 1980 ई. में **'बाबा निक्का सिंह चैरीटेबल ट्रस्ट'** निर्मल कुटिया, करनाल, रजि. करवाया। संत महाराज जी की सेहत ज्यादा बिगड़ने पर भगत जी की अगुवाई में सभी संगत और इस परीवार ने मिलजुल कर हर प्रकार की सेवा, गुरू का लंगर एवं डॉक्टरी ईलाज तन, मन, धन से किया। पूज्य संत महाराज जी के प्रति सभी संगत की प्रभु चरणों में हार्दिक अरदास, अथक सेवा, प्रेम भावना सदका शीघ्र ही संत महाराज जी का शरीर स्वस्थ हो गया।

श्री विनीत चावला (लक्की): स्व. विनीत चावला 'लक्की' जी संत अमरीक देव जी के छोटे सुपुत्र थे। जब संत अमरीक देव जी ने अपने माता-पिता के नाम से ट्रस्ट रजिस्टर्ड करवाने का मन बनाया तो **विनीत चावला जी** ने इस सेवा को करने की अपनी इच्छा व्यक्त की। यह जान कर श्री अमरीक देव जी का हृदय गद्‌गद् हो गया। अत: 'बाऊ जी' ने प्रसन्नचित से यह सेवा विनीत चावला को दे दी। इस दायित्व के अतिरिक्त विनीत चावला जी ने विद्यालयों के संचालन के दायित्व को बाखूबी निभाया। वह **'बाल-कल्याण निकेतन'** के निर्धन, निराश्रित, असहाय बच्चों के जीवन में खुशियाँ भरने के लिए सदैव अपने तह दिल से यत्न करते रहे।

(1964 - 2009 ई.)

एक समय **विनीत चावला 'लक्की' जी** अचानक एक गंभीर रोग से ग्रस्त हो गये। उनको पहले दिल्ली के एक चिकित्सालय में और बाद में चैन्नई के एक बड़े अस्पताल में दाखिल कराया गया। संयोगवश उन दिनों **संत जोध सिंह जी, ऋषिकेश से श्री अमरीक चंद चावला जी** को मिलने निर्मल धाम करनाल आये हुए थे। जब उन्हें पता चला तो वे भी 'बाऊ जी' के साथ लक्की जी को देखने चैन्नई चले गये। उस समय लक्की जी अति गम्भीर हालत में वेंटिलेटर पर थे। कुछ समय बाद जब लक्की जी ने महाराज जी को देखा तो उन्होंने स्टाफ से कागज़, पैन मांगा। लक्की जी ने अपने कांपते हाथों से उस कागज पर पंजाबी में लिखा ਤੇਰਾ ਤੇਰਾ ਤੇਰਾ (तेरा तेरा तेरा) बस! यह शब्द उनके अंतिम लिखित शब्द थे जिनका भावार्थ कुछ ऐसा प्रतीत देता था कि 'मेरा जो कुछ भी है वह सब तेरा ही है।' इस घटना के कुछ दिन बाद ही उन्होंनें शरीर त्याग दिया।

श्री अमरीक चन्द जी का साधू होना: श्री अमरीक चन्द जी को जनहित कार्य करते हुए श्री संत निक्का सिंह महाराज जी की सेवा, सानिध्य और सत्संग प्राप्त होता रहा। आपको पूज्य महाराज जी के उपदेश, दिशा-निर्देश समय-समय पर मिलते रहे। हर समय सेवा-सिमरन की लगन लगी रहने के कारण श्री अमरीक चन्द जी संसारी पदार्थों, प्राणीयों एवं कार्यों से उपराम रहने लगे। अंतत: सांसारिक दायित्वों को त्यागकर 17 अक्तूबर 2002 को संन्यास धारण कर लिया। तब से उनका नाम **'संत अमरीक देव जी'** पड़ गया। अपनी आवश्यकतायों को संकोच कर साधारण जीवन जीने लगे। परंतु गुरू जी की आज्ञा का पालन करते हुए, वह एक कर्मयोगी की भूमिका भी पूरी लगन से निभाते रहे। अत: अंतले श्वास तक सभी सेवा-संस्थाओं का कार्यभार पूर्ण निष्ठा व जिम्मेदारी से संभालते रहे।

श्री संत अमरीक देव जी

श्री संत अमरीक देव जी द्वारा संचालित **'भगत लभामल करतार कौर चैरिटेबल ट्रस्ट' (पंजीकृत 04 अगस्त 1997 ई.) व 'संत निक्का सिंह पब्लिक स्कूल ट्रस्ट सोसाइटी' (पंजीकृत 10 दिसम्बर 1999 ई.)** निर्मल धाम, मॉडल टाउन, करनाल के अंतर्गत निम्न सेवा केन्द्र, सामाजिक शुभ कार्यों में संलग्न हैं:-

1. **भगत लभामल वृद्धाश्रम, निर्मल धाम, करनाल (1998 ई.)**
2. **माता करतार कौर आर्थिक सहायता केन्द्र (1998 ई.)**
3. **माता करतार कौर मैमोरियल पुस्तकालय (1998 ई.)**
4. **संत निक्का सिंह पब्लिक स्कूल, मॉडल टाऊन (1999 ई.)**
5. **माता करतार कौर बाल कल्याण निकेतन (2000 ई.)**
6. **संत निक्का सिंह पब्लिक स्कूल, ज़रीफा फार्म (2001 ई.)**
7. **संत निक्का सिंह पब्लिक स्कूल, सदर बाज़ार (2003 ई.)**
8. **संत निक्का सिंह आई.टी.आई., मॉडल टाऊन (2004 ई.)**
9. **लक्की चावला चैरिटेबल ट्रस्ट, दिल्ली (2011 ई.)**
10. **विशाल सतसंग भवन का निर्माण (2017 ई.)**

पूर्णतया समर्पण: **श्रीमान् संत निक्का सिंह महाराज जी** की कृपा से चलाई उपरोक्त सारी संस्थाओं के माध्यम से चल रही परोपकारी सेवाओं के प्रबंध को चलाने एवं अपने शरीर की वृद्ध अवस्था को ध्यान में रखते हुए, सभी सेवा संस्थानों को दिनांक 18 जुलाई सन् 2008 ई. में **निर्मल आश्रम, ऋषिकेश** के वर्तमान गद्दी-नशीन **श्रीमान् पूज्य महंत बाबा राम सिंह जी** के चरणों में समर्पित कर दी। जैसे कि गुरबाणी में भगत कबीर जी का फुरमान है:-

कबीर मेरा मुझ महि किछु नही जो किछु है सो तेरा।।
तेरा तुझ कउ सउपते किआ लागै मेरा।। (अंग 1375)

दिनांक 18 जुलाई सन् 2008 को समर्पण समागम के दौरान संत अमरीक देव जी अपना सर्वस्व सौंपते हुए

पूज्य महंत बाबा राम सिंह जी ने संत अमरीक देव जी की श्रद्धापूर्वक की गयी विनती को स्वीकार कर लिया। परंतु संत अमरीक देव जी पूज्य महाराज जी की आज्ञानुसार सभी सेवाओं को पहले की तरह ही पूरी जिम्मेदारी से अपने आखरी श्वास तक निभाते रहे। इस तरह पूरी लगन से सभी संस्थानों की सेवा करते हुए एक समय अचानक उनकी तबियत खराब हो गई। उन्हें तुरंत ही अच्छे उपचार के लिए मैक्स अस्पताल, शालीमार बाग, दिल्ली में दाखिल करवाया गया। वहीं पर पूज्य महाराज जी एवं संत जोध सिंह जी ऋषिकेश से दिनांक 3 अप्रैल 2016 को उन्हें देखने पहुँचे थे। कुछ समय बाद जब सेहत में कोई सुधार नहीं हुआ तब पूज्य महंत राम सिंह जी की आज्ञानुसार उन्हें अस्पताल से **'निर्मल कुटिया, करनाल'** पर नमस्कार करवा के निर्मल धाम, मॉडल टाउन में लाया गया। क्योंकि वह प्राय: कहा करते थे कि 'मैं चाहता हूं कि मेरे अंतिम श्वास निर्मल धाम, करनाल में ही निकलें।' देवनेत से निर्मल धाम पहुंचने के कुछ ही घंटों पश्चात् दिनांक 21 अप्रैल 2016 को उन्होंने प्राण त्याग दिये।

संत अमरीक देव जी की आस्था श्रीमान् संत निक्का सिंह 'विरक्त' जी महाराज के प्रति अत्यधिक थी एवं आश्रम के सभी संतों से अति स्नेह था। इसी कारण श्रीमान् महंत राम सिंह जी एवं संत जोध सिंह जी ने उनके पार्थिव शरीर को कंधा दिया। विरक्त महाराज जी के शिष्य सभी संतों ने आपसी सलाह करके, निर्मल धाम के प्रागंण में ही महंत राम सिंह जी ने उनके पार्थिव शरीर को मुखाग्नि दी। अब इसी स्थान पर उनकी याद में एक सुन्दर **सतसंग भवन** का निर्माण किया गया है। यहाँ पर सुबह-शाम पाठ, पूजा, कीर्तन तथा सत्संग का प्रवाह चलता रहता है।

निर्मल धाम की संगत, सेवादार, स्टाफ, वृद्ध एवं बच्चे इन महान संतों को शत्-शत् नमन करते हैं।

पूज्य महंत बाबा राम सिंह जी महाराज

परम पूज्य ब्रह्मज्ञानी संत बाबा निक्का सिंह 'विरक्त' जी महाराज की कृपा के पात्र तथा महंत नारायण सिंह जी महाराज के नादी वंशज उत्तराधिकारी, निर्मल आश्रम, ऋषिकेश के वर्तमान गद्दी-नशीन पूज्य महंत बाबा राम सिंह जी महाराज का जन्म 17 अक्तूबर, सन् 1950 ई. को पिता श्री अरूड़ चंद 'उप्पल' तथा माता श्रीमती विमला देवी जी के गृह में हुआ। शुभ कर्मों के परिणामस्वरूप, भक्ति के संस्कारों के कारण, बचपन से ही संत-सेवा में रूचि रखते थे। स्कूल से आते ही छोटी कुटिया में श्री संत भगत सिंह जी महाराज को नमस्कार करने उपरांत निर्मल कुटिया पहुँच कर सभी संतों महापुरूषों के चरणों में नमस्कार करते तथा लंगर-सेवा में लग जाते। इस प्रकार संतों के दर्शन, सत्संग तथा सेवा आदि में ही अधिक रूचि रखते थे। पूज्य गुरूदेव संत बाबा निक्का सिंह 'विरक्त' महाराज जी के लिए लंगर अपने हाथों से तैयार करते थे एवं अपने हाथों से ही लंगर खिलाने की सेवा करते थे।

पूज्य संत निक्का सिंह 'विरक्त' जी, महंत राम सिंह जी को दस्तार बंदी समय आर्शीवाद देते हुए

गुरू आज्ञा अनुसार, कुछ समय पंजाब एंड सिंध बैंक की शाखा 'बरनाला' (पंजाब) में नौकरी करते रहे परन्तु आपका मन तो सदा गुरू दर्शनों में ही लगा रहता था। मई सन् 1981 में आप बैंक से छुट्टी लेकर पूज्य गुरूदेव जी के दर्शनार्थ **निर्मल बाग, कनखल (हरिद्वार)** आये हुये थे। पूरी लगन, प्रेम, श्रद्धा और बैरागमयी अवस्था में सेवा करते हुए देखकर श्री संत बाबा निक्का सिंह 'विरक्त' जी महाराज ने आप को प्रसन्नचित से निर्मल संत स्वरूप दे दिया। उपरांत आज्ञा दी कि **निर्मल आश्रम, ऋषिकेश** श्रीमान् महंत नारायण सिंह जी के साथ उनकी आज्ञा में रहते हुए तन-मन से सेवा करो। ऐसे लगभग डेढ वर्ष पूज्य महंत नारायण सिंह जी की आज्ञा में आश्रम की सेवा करते रहे। अंततः प्रभु हुक्म अनुसार निर्मल आश्रम की अथक सेवा निभाते हुये, पूज्य महंत नारायण सिंह जी 25 अक्तूबर, सन् 1982 ई. को सचखंड पिआना कर गये। उनके निमित्त रखे गये श्री गुरू ग्रंथ साहिब जी के अखण्ड पाठ साहिब का भोग 10 नवंबर, सन् 1982 ई. को सम्पन्न हुआ। इस तिथि पर निर्मल साधु-समाज तथा प्रेमी संगत द्वारा श्री गुरू महाराज जी की हजूरी में अरदास करके संत निक्का सिंह 'विरक्त' जी एवं पधारे हुए सभी संतों-महांपुरूषों ने महंत नारायण सिंह जी के उत्तराधिकारी पूज्य महंत राम सिंह जी को पगड़ी की रस्म अदा करी एवं विशाल भण्डारा किया गया।

पूज्य महंत बाबा राम सिंह जी महाराज का अंतःकरण पूर्णतः शुद्ध है। आप जी का व्यक्तित्व अति तेजस्वी एवं रूहानी शक्ति का प्रत्यक्ष प्रमाण है। आप जी सदा ही आत्म-आनंद, गुरू-हुक्म तथा प्रभु की महिमा में लीन रहते हैं। आप के निर्मल हृदय में सत्य का ज्ञान प्रचंड है। इसी ज्ञान के प्रकाश को आप विश्व भर में प्रचार के माध्यम से प्रसारित करने के लिये दृढ़ संकल्प हैं। पूज्य महाराज जी श्रद्धालुओं को आत्म ज्ञान का उपदेश देकर निहाल करते हैं।

संत बाबा जोध सिंह जी का जन्म 14 अगस्त सन् 1948 ई. को स. लछमण सिंह जी तथा माता ज्ञान कौर जी के गृह में, गाँव सीहां दौद, जिला लुधिआना, पंजाब में हुआ। परमार्थक लग्न के संस्कार अधिकतर पूर्वले कर्मों के फल अनुसार ही हुआ करते हैं परन्तु आप जी को **'विरक्त' महाराज** जी की पवित्र संगत करने के कारण ऐसे शुभ संस्कार बचपन में ही प्राप्त होने शुरू हो गए।

संत बाबा जोध सिंह जी

माता जी की प्रवृत्ति धार्मिक तथा संत-सेवी थी। उनको पूज्य **श्रीमान् संत गोपाल सिंह जी महाराज** जो कि श्रीमान् संत निक्का सिंह 'विरक्त' जी के आज्ञाकारी शिष्य थे, संगत करने का सौभग्य प्राप्त हुआ। आप जी को भी इन महान संतों की संगत छोटी आयु में ही प्राप्त हो गयी थी। आप जी ने सांसारिक विद्या प्राप्त करने के साथ-साथ, गुरू कृपा द्वारा परमार्थ और गुरवाणी की विद्या में भी गहन ज्ञान प्राप्त किया। कुछ समय आप जी ने पंजाब एंड सिंध बैंक की शाखा, गुजरांवाला टाऊन, दिल्ली में नौकरी की। आप जी को संतों की संगत करते हुए श्री गुरू ग्रंथ साहिब जी की पवित्र बाणी के पाठ करने एवं गुरबाणी के तात्पर्य समझने में अति रूचि होने लगी जिसके फलस्वरूप आपका मन उपरामता में रहने लगा। इसी उपराम, बैरागमयी अवस्था में पूज्य संत निक्का सिंह 'विरक्त' जी महाराज को संसारिक नौकरी छुड़वाकर, उनके चरणों की सेवा प्रदान करने की विनती करते रहे। आपकी परमार्थक रूचियों को देखते, जानते हुए पूज्य संत बाबा निक्का सिंह जी महाराज ने कृपा करके 3 अप्रैल 1983 ई. को संत स्वरूप देकर सांसारिक बंधनों से मुक्त कर दिया। तत्पश्चात अनेकों वरदान एवं आर्शीवाद देकर आपको श्रीमान् महंत बाबा राम सिंह जी के साथ निर्मल आश्रम, ऋषिकेश जाकर सेवा करने की आज्ञा दे दी। परम पूज्य महंत बाबा राम सिंह जी महाराज प्रायः गुरमति प्रचार-प्रसार एवं मानव कल्याण हित देश-प्रदेश की संगत में विचरते रहते हैं। उनके मार्गदर्शन में बढ़ती जिम्मेदारियों को गुरू कृपा द्वारा आप जी अति सूझ-बूझ तथा दूर-दृष्टि से निभाते हैं। निर्मल आश्रम की सारी **सेवा संस्थाओं** जैसे कि **निर्मल आश्रम अस्पताल, मायाकुण्ड, ऋषिकेश, निर्मल आश्रम दीपमाला पब्लिक स्कूल, श्यामपुर, निर्मल आश्रम ज्ञान दान एकैडमी, खैरी-कलां (पूर्णतः निःशुल्क स्कूल), निर्मल आश्रम आँखों का अस्पताल, खैरी-कलां तथा हरि कृपा सिलाई केन्द्र, ऋषिकेश** आदि का हर प्रकार मार्गदर्शन तथा देख-रेख करते हैं।

एन.जी.ए., खैरी-कलां में उत्तराखण्ड के हरेला पर्व पर वर्क्षारोपण करते हुए

निर्मल आश्रम-ऋषिकेश के अधीन चल रही अनेकों सेवाओं जैसे निर्मल बाग-कनखल (हरिद्वार), जगि दाता फार्म, जमालपुर, संगत ज्ञान गुफा, कर्ण घंटा, बनारस (काशी), निर्मल आश्रम एस्टेट, माल रोड़, मसूरी, निर्मल संत निवास, मुबई आदि सेवाओं के अतिरिक्त करनाल में पूज्य संत निक्का सिंह 'विरक्त' जी महाराज के अनिन्न सेवक श्री संत अमरीक देव जी द्वारा स्थापित निर्मल धाम, मॉडल टाउन में जो समाज कल्याण की सेवाएं चलाई गयी थीं, उन सभी संस्थानों जिनमें तीन स्कूल, वृद्ध आश्रम, आई टी आई, अनाथालय, पुस्तकालय, सत्संग एवं गुरू के लंगर की सेवा को पूर्ण लगन, मेहनत व कुशलता पूर्वक देख-रेख करते हुए आगे बढ़ाने के यत्न कर रहे हैं।

हमारे आदरणीय संत एवं प्रमुख सेवा स्थान

श्रीमान् संत भरत सिंह जी 'शास्त्री'

श्रीमान् संत भरत सिंह जी का जन्म श्री देवकी नंदन जी और श्रीमती राजपती देवी जी के गृह में गांव बीबीआपुर, जिला गोंडा (यू.पी.) में हुआ। एक समय वैराग की तीव्र दशा में गुरू की तलाश करने निकले। यही ढूंढ करते हुए त्रिवेणी घाट, ऋषिकेश पहुँचे। पावन गंगा जी में स्नान करने उपरांत एक साधू से किसी पूर्ण संत के बारे पूछा। उस महात्मा ने श्री निर्मल आश्रम में जाने को कहा। वहाँ पहुँचते ही **श्री संत निक्का सिंह 'विरक्त' जी** से मिले और अपनी जिज्ञासा प्रकट की। आपकी विनती परवान करके 'विरक्त' महाराज जी ने काशी जाकर संस्कृत मे विद्या अध्ययन करने को कहा। विद्या ग्रहण करने उपरांत पूज्य महाराज जी की आज्ञानुसार **निर्मल बाग, कनखल (हरिद्वार)** तथा **संगत ज्ञान गुफा**, काशी की सेवा पूरी निष्ठा से कर रहे हैं।

प्रवेश द्वार

श्री दरबार साहिब

गौशाला

जगि दाता फार्म- गांव जमालपुर कलां (हरिद्वार)

संगत ज्ञान गुफा-काशी

श्रीमान् संत निरभिंदर सिंह (सरपंच जी)

श्रीमान् संत निरभिंदर सिंह 'सरपंच' जी का जन्म 30.03.1946 को गांव लोपे, जिला पटियाला (पंजाब) के एक गुरमुख परिवार में हुआ। लगभग 20 साल की आयु में **पूज्य संत बाबा निक्का सिंह 'विरक्त' जी** का संग हुआ। गुरबाणी की आरंभिक विद्या भाई भगवान सिंह जी, मल्लेवाल से प्राप्त की। आपको कई वर्षों तक ब्रह्मज्ञानी संत निक्का सिंह जी का पावन संग करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। कुछ समय निर्मल आश्रम, ऋषिकेश में सेवा करते रहे। **पूज्य महंत राम सिंह जी** ने आश्रम की शाखा **'निर्मल संत निवास'** मुंबई की सेवा सौंप दी। सन् 1997 ई. में पूज्य महाराज जी के कर-कमलों से साधू वेश प्राप्त हुआ। पूज्य महाराज जी ने आपको **निर्मल कुटिया, करनाल** की सेवा संभाल तथा देख-रेख करने की जिम्मेंदारी दी। वहाँ पर एक **गौशाला** है जिसको आपने आधुनिक तकनीक की गौशाला बना दिया। कुटीया में **'नानक दरबार'** एवं 'विरक्त' जी की याद में बने 'समाधी वाले हॉल' में निरंतर चल रहे श्री गुरू ग्रंथ साहिब जी के अखण्ड पाठ, नितनेम एवं कीर्तन की सेवा में बढोत्तरी कर दी। गुरू के लंगर की सेवा को अति विशाल रूप दे दिया। इन सभी परोपकारी सेवाओं को आप जी कुशलता पूर्वक निभा रहे हैं।

मुख्य प्रवेश द्वार

नानक दरबार

लंगर सेवा

गौशाला

रब्बी पाठशाला, करनाल

श्रीमान् संत कंवल इन्द्र सिंह जी

श्रीमान् संत कंवल इन्द्र सिंह जी का जन्म सन् 1949 ई. को गांव बांसा, जिला करनाल में हुआ। स्कूली विद्या प्राप्त करते हुए खेती-बाड़ी भी करते रहे। सितम्बर सन् 1983 ई. को श्री हेमकुंट साहिब जी की यात्रा करने आये और **निर्मल आश्रम, ऋषिकेश** में ठहरे। इसी दौरान **पूज्य महंत बाबा राम सिंह जी** के दर्शन हुए। परमार्थ के वैरागमयी उपदेश सुन कर आप अति प्रभावित हुए अत: आप पूज्य महाराज जी के प्रेम में बहुत लीन रहने लगे। आपको संसारिक पदार्थों, घर-बार, मकान, जायदाद आदि में जो आसक्ति थी वह दिन-ब-दिन कम होती गयी। कुछ समय बाद अपनी सारी निजी जायदाद (भूमि, मकान आदि) पूज्य महाराज जी को समर्पित कर दी। सन् 1992 ई. के ऋषिकेश बरसी समागम में नाम की दात प्राप्त हुई। नाम का सिमरन एवं सत्संग करते हुए, आपका मन उदासीन दशा में रहने लगा। सन् 1997 ई. में पूज्य महाराज जी ने अधिकारी जानकर आपको साधू वेश दे दिया। गुरु आज्ञानुसार कई वर्ष **निर्मल कुटिया, करनाल** में सेवा करते रहे। जब निर्मल कुटीया, गाँव रंबा की इमारत बन कर पूरी तैयार हो गयी, श्री गुरू ग्रंथ साहिब जी का प्रकाश हो गया तब से गुरू का लंगर एवं गुरबाणी की शिक्षा देना भी शुरू हो गया। आप जी को **निर्मल कुटिया, रंबा** का मुख्य सेवादार नियुक्त किया गया। समूह संगत से प्रेम व सहयोग रखते हुए कुटीया की सारी सेवा श्रद्धापूर्वक निभा रहे हैं।

निर्मल कुटिया, गांव रंबा (करनाल)

पूज्य महाराज जी कुटिया की सेवा सौंपते हुए

NIRMAL DHAM, MODEL TOWN, KARNAL (HARYANA)

Charitable Services

Sh.Amrik Chand Chawla R/o Karnal was a blessed and humble devotee of Sant Baba Nikka Singh 'Virakat' Ji Maharaj. He was a leading industrialist and a philanthropist. 'Virakat' Ji Maharaj often used to counsel Chawla Ji to help the poor, needy, orphans and downtrodden persons of society. Continuing his efforts, in the year 1999, he got registered 'Sant Nikka Singh Public School Trust Society'. Through above mentioned Society, he aimed at providing quality education to the children of poor parents. With the passage of time, the society established three schools & one ITI in the name of Sant Nikka Singh Ji Maharaj.

1. SNS Public School, Nirmal Dham, Karnal
2. SNS Public School, Zarifa Farm, Karnal
3. SNS Public School, Sadar Bazar, Karnal
4. SNS ITI, Model Town, Karnal
5. Mata Kartar Kaur, Memorial Library
6. Mata Kartar Kaur, Bal Kalyan Niketan
7. Bhagat Labha Mal Bridh Ashram

SNS Public School (Senior Wing) Nirmal Dham

Presently, approx. 3150 students are taking quality education & training through these charitable institutions. For this cause approx. 130 teachers are serving in these Educational and Training Institutes. Outstanding Results of Board Examinations very clearly communicate the devotion, sincerity & hard work of the intellectual teaching & non-teaching staff.

Main Entrance: Administrative Block
SNS Public School

Junior Wing
SNS Public School

SNS Public School, Zarifa Farm, KARNAL (Affiliated to CBSE, New Delhi)

MERITORIOUS STUDENTS

HH Mahant Ram Singh Ji Maharaj, Sant Baba Jodh Singh Ji, Meritorious Students, Principals, Teachers, Participants, Guests and the Members of Management

SNS Public School, Sadar Bazar, KARNAL

Students of SNS ITI Model Town getting training for Sewing, Stitching and Computer Education

MATA KARTAR KAUR MEMORIAL LIBRARY

Students of SNS Public School, Nirmal Dham are going through Newspapers, Magazines, Periodicals & Religious Books in Mata Kartar Kaur Memorial Library.

BHAGAT LABHA MAL BRIDH ASHRAM (AN OLD AGE HOME)

Bhagat Labhamal Ji

There is an Old Age Home running in the name of Bhagat Labha Mal Bridh Ashram at Nirmal Dham, Model Town, Karnal. There are approximately 120 elderly persons (male & female) residing in ventilated rooms. All rooms have air coolers, attached bathrooms duly equipped with geysers. The Management provides boarding, lodging and pure vegetarian meals, milk, snacks, tea etc. A visiting Doctor examines the inmates daily. Free treatement and medicines are also provided as per prescription of Doctor. Use of alcohol, smoking or any other type of intoxicants are strictly prohibited in the campus. Every activity in the campus is completely monitored under the CCTV surveillance. Besides our staff members also watch every activity of the Ashram round the clock. There is ample time to relax for every resident. To attend satsang is mandatory for all the residents. Parsad is distributed after the recitation of Gurbani Path, Kirtan, Singing of Hymns during daily Satsang. Satsang Bhawan has sufficient sitting capacity for all the residents, devotees, staff as well as for visitors/ guests.

Doctor examining the patients

Male & Female members of 'Old Age Home' are sitting in their leisurely mood

Satsang Bhawan, Nirmal Dham

Ladies of 'Old Age Home' are performing their services towards the Community Kitchen (Langar)

भगत लभामल वृद्धाश्रम

राजेश शर्मा

निर्मल धाम, मॉडल टाउन, करनाल के **भगत लभामल वृद्धाश्रम** में श्री राजेश शर्मा जी सन् 2011 से बुर्जुगों की सेवा-संभाल के इन्चार्ज (प्रभारी) के तौर पर कार्यरत हैं। आप एक सुशील, शांत, मिलनसार एवं मीठे स्वभाव के व्यक्ति हैं। आप वृद्धाश्रम में आने वाले सभी वृद्धों का अभिलेख, कानूनी दस्तावेज, पहचान पत्र एवं सभी जरूरी कागजातों को पूरा करके संभालते हैं। प्रतिदिन सभी उपस्थिती वृद्धों की सेहत, कमरे एवं वस्त्रों की सफाई देखते हैं। बीमारी की हालत में उनका चैकअप प्रतिदिन आने वाले चिकित्सक से करवा कर दवाईयों का प्रबंध करते/करवाते हैं। उनकी समस्याओं को बहुत धैर्य से सुनते हैं व मुख्य प्रबंधक के साथ मिलकर उन समस्याओं का निवारण एवं आवश्यकताओं की पूर्ति करते हैं। आश्रम प्रबंधन द्वारा दी गई सभी सेवाओं को आप भली-भांति पूर्ण जिम्मेदारी से निभा रहे हैं।

भगत लभामल वृद्धाश्रम में रह रहे वृद्धों के विचार

स्वामी राजेश्वर राव

मैं **राजेश्वर राव** 20 अक्तूबर, 2009 को निर्मल धाम वृद्धाश्रम में आया था। अपना घर गृहस्थी करने का कभी भी विचार नहीं हुआ। बस केवल प्रभु भक्ति, नाम सुमिरन, सत्संग व निष्काम सेवा करना ही रुचिकर लगता था। इस आश्रम में दोनों वक्त (सुबह-शाम) सत्संग, कीर्तन व भजन होता है, शुद्व-शाकाहारी भोजन मिलता है। यहाँ के सभी सेवादार, स्टाफ एवं प्रबंधक अति सेवा और प्रेम भाव वाले हैं।

ऐसा सब कुछ देखते हुए मेरा मन यहीं ठहर कर सभी सत्संगी, बुजुर्ग प्रणीयों की सेवा करने का हो गया । तत्पश्चात यहाँ के धार्मिक, शांत और शुद्व वातावरण में मेरा मन प्रभु भक्ति में मग्न रहने लगा। अगर कोई मेरा निजी घर होता तब भी शायद इतना अच्छा न लगता जितना यहाँ सब लोगों के साथ रहकर महसूस होता है। यहाँ रहना एक मंदिर में रहने का आभास होता है और आत्मिक शांति की अनुभूति होती है। पूज्य महाराज जी समय समय पर पधार कर हमें अपने रूहानी दर्शन, आर्शीवाद व प्रसाद देने की कृपा करते रहते हैं।

नफे सिंह

मैं **नफे सिंह** पुत्र श्री मोजी राम निवासी **जींद** (हरियाणा) कुछ अनिवार्य, असहनीय पारिवारिक परिस्थतीयों से परेशान होकर दिनांक 22 जुलाई, 2019 को यहाँ 'निर्मल धाम वृद्धाश्रम' में आया। यहां पहुँचकर आश्रम के अधिकारीयों से मिला और अपनी सारी विथ्या सुनाई। मैने निम्रता से विनती की कि मुझे इस आश्रम में रहने के लिए शरण दी जाये। प्रबंधक महोदय ने मेरी विनती को मंजूर करते हुए मुझे यहाँ रहने की अनुमति दे दी। मुझे यहाँ हर प्रकार की सुख सुविधा है। यहाँ पर शुद्व भोजन, हवादार कमरे, साफ-सुथरे विस्तर, शांत एवं ऐसा धार्मिक माहौल मिला कि दोबारा कहीं और जाने का मन ही नहीं हुआ। बस! तब से मैं यहीं का ही होकर रह गया और हर प्रकार की सेवा करते हुए प्रसन्नचित रह रहा हूँ।

कमलेश

मैं **कमलेश** दिनांक 24 अक्तूबर, 2016 से निर्मल धाम वृद्धाश्रम में रह रही हूँ। यहाँ पर अपने निजी घरों से भी कहीं ज्यादा सुख सुविधाएं हैं। सभी वृद्ध प्रणीयों को बाथरुम अटैच कमरे मिले हुए हैं। सभी कमरों में बैड, गद्दे, मेज, कुर्सीयाँ, पंखे, कूलर, गीज़र आदि की सुविधा दी गई है। हम सब का चिकित्सीय चैकअप करने के लिए डॉक्टर भी प्रतिदिन आते हैं एवं नि:शुल्क दवाईयाँ भी मिलती हैं। यहाँ रहते हुए हमें अपने घर-परीवार की कभी भी याद नहीं आयी। यहाँ पर मेरे जैसे सैकड़ों बेसहारा वृद्ध रहते हैं। प्रभु हुकम अनुसार जब भी किसी वृद्ध प्राणी की मृत्यु हो जाती है तब आश्रम प्रबंधन द्वारा उस मृतक देह का अंतिम संस्कार भी पूरी मर्यादा से करवाया जाता है।

दया रानी

मैं **दया रानी** दिनांक 6 जून, 2009 से इस आश्रम में रह रही हूँ। मैं सरकारी स्कूल से अध्यापक के पद से रिटायर हुई। तत्पश्चात यह अहसास हुआ कि अब बाकी बची जिंदगी मुझे कहीं शांत मन से गुजारनी है। किसी अज्ञात प्राणी ने मुझे इस वृद्ध आश्रम के बारे बताया तो मैं यहँ पहुँच गई। यहाँ पर मुझे श्री संत अमरीक देव जी जिन्होंने वृद्रों के लिए यह सेवा आरम्भ की थी मिले और आश्रय दे दिया। यहाँ पर मुझे मेरे जैसै कई वृद्ध प्राणी मिले जिनसे परिवार की तरह स्नेह मिला। यहाँ पर निर्मल कुटीया करनाल वाले पूज्य महंत बाबा राम सिंह जी महाराज एवं संत जोध सिंह जी के भी दर्शन हुए। यहाँ के धार्मिक, शांत एवं प्रेम भरे वातावरण से हम सब वृद्ध बहुत खुश हैं।

MATA KARTAR KAUR BAL KALYAN NIKETAN

Bal Kalyan Niketan is another unique service at Nirmal Dham. It provides shelter for orphans, poor and needy children. Presently approx. 15 girls are residing therein. All are being served pure vegetarian food, clothing and homely shelter. All efforts are made to provide quality education as well as school and civil uniforms etc. Apart from above mentioned facilities, arrangements are also made to teach Gurmukhi, Gurbani Path, Gurbani Kirtan to enhance their moral and ethical values. With the passage of time, the Management also arranges weddings of loving daughters residing in Bal Kalyan Niketan.

Mata Kartar Kaur Ji

Girls of 'Bal Kalyan Niketan' enjoying their Meals

Girls of 'Bal Kalyan Niketan' reciting Gurbani Kirtan in Satsang Hall on the occasion of Death Anniversary of Sh. Vineet Chawla 'Lucky'

In the premises of Satsang Bhawan Nirmal Dham, Wedding Ceremony (Anand Karaj – 16 April 2023) of a girl named 'Aarti' who was a resident member of 'Bal Kalyan Niketan'. H.H. Mahant Ram Singh Ji Maharaj & Sant Jodh Singh Ji, both are attending the Holy Prayer.

माता करतार कौर बाल कल्याण निकेतन

कु. एकता चावला

कु. एकता चावला सुपुत्री श्री अशोक चावला, करनाल, सन् 2009 से **'माता करतार कौर बाल कल्याण निकेतन'** में रहने वाले बच्चों की देखभाल व सेवा संभाल अति लगन और मेहनत से कर रही हैं। आप बच्चों को हर प्रकार की धार्मिक व नैतिक शिक्षा प्रदान करती हैं। एकता की निरंतर सेवा का ही परिणाम है कि 'बाल कल्याण निकेतन' के सभी बच्चे गुरमुखी लिपि में पंजाबी भाषा की शिक्षा लेकर गुरबाणी पाठ, संगीत व गुरबाणी कीर्तन में निपुणता हासिल कर चुके हैं। समय-समय पर पूज्य महंत राम सिंह जी महाराज इन बच्चों से गुरबाणी पाठ, कीर्तन श्रवण करते हैं और उनको प्रसादि, वस्त्र आदि हर प्रकार की वस्तुएँ देकर अपना अशीर्वाद देते रहते हैं।

बाल कल्याण निकेतन में रह चुकी बालिकाओं के विचार

ज्योति

मैं, **ज्योति** वर्ष 2002 में 'बाल कल्याण निकेतन' में आई थी। मेरा सौभाग्य था जो मुझे यहाँ के संस्थापक श्री संत अमरीक देव 'बाऊ जी' का सानिध्य प्राप्त हुआ। उन्होंने मेरा एक पिता की तरह पालन पोषण किया वा पढ़ाई करायी। उनको हम सब बच्चे बहुत प्यार करते थे क्योंकि 'बाऊ जी' प्रेम, परोपकार, सेवा, दान एवं दया की साक्षात मूरत थे। आज मैं अपनी जिंदगी में जो कुछ भी हूँ वह सब 'बाऊ जी' के कारण ही हूँ। अगर वह मुझे आश्रय न देते तो शायद आज मैं सड़कों पर भटक रही होती। मेरे जैसे कई बच्चों को आश्रम में सहारा देकर इस काबिल बनाया कि हम सब आत्मनिर्भर होकर अपना जीवन चला सकें। उन्होंने अपने जीते जी ही अपनी सारी संपदा एवं सभी विशाल सेवा संस्थानों को परम पूज्य महंत राम सिंह जी महाराज के चरणों में समर्पण कर दिया। पूज्य महाराज जी ने भी एक पिता/गुरू की तरह हमारा मार्ग दर्शन किया। जब मैं बड़ी हुई तो महाराज जी ने मेरी एक संपंन घर में शादी करवाई। आज मैं संत निक्का सिंह पब्लिक स्कूल, निर्मल धाम में अध्यापक के पद पर कार्यरत हूँ। मैं अपने पति एवं एक बेटी के साथ एक खुशहाल जीवन जी रही हूँ जिसका श्रेय हमारे **प्रिय बाऊ जी एवं श्रीमान् महंत बाबा राम सिंह जी महाराज** को जाता है।

तारा

मैं, **तारा** अपना सौभाग्य मानती हूँ कि किसी कारण मुझे माता करतार कौर बाल कल्याण निकेतन में शरण मिली। इस पावन भूमि में मुझे पिता समान 'बाऊ जी' का संग मिला जिन्होने वहाँ रहने वाले सभी बच्चों को ठहरने के लिए अच्छे कमरे, बिस्तर, भोजन, वस्त्र, पढ़ाई, पाठ्य सामग्री, परिवहन एवं चिकित्सीय सुविधा प्रदान की हुई थी। हम सब बच्चे उन्हें प्रेम से 'बाऊ जी' बुलाते थे। उन्होंने हमें स्कूल विद्या के साथ-साथ धार्मिक, नैतिक व संगीतक शिक्षा दी। हमारे पिता समान 'बाऊ जी' ने सन् 2008 में अपना सर्वस्व पूज्य महंत राम सिंह जी महाराज, निर्मल आश्रम, ऋषिकेश, निर्मल कुटीया, करनाल वालों को समर्पित कर दिया। बाद में हमें भी पूज्य महाराज जी के दर्शन करवाये जिनकी कृपा से मेरी शादी सन् 2015 ई. में करनाल नगर के ही एक संपंन परिवार में करवाई यहाँ पर मैं अपने परिवार में सकुशल व प्रसन्न हूँ। मैं संत निक्का सिंह ITI में COPA Instructor के पद पर कार्यरत हूँ। सन् 2016 में बाऊ जी का देहांत होने उपरांत पूज्य श्रीमान् महंत बाबा राम सिंह जी महाराज व संत जोध सिंह जी ने बाल कल्याण निकेतन में रह रहे हम सब बच्चों को बहुत प्यार दिया एवं बाऊ जी की कोई कमी महसूस नहीं होने दी।

Bharti

By the Grace of Almighty, Myself **Bharti**, had come to Mata Kartar Kaur Bal Kalyan Niketan after the sad demise of my dear father in 2005 along with my mother **Poonam** and my two younger sisters. Shri Sant Amrik Dev Ji who was the founder of all these charitable services, gave us asylum and provide a lot of support, privileges and comforts. He himself and manager of all institutions Sh. Rajesh Kumar Gupta always treated us as their daughters & sisters. By the passage of time, I got married in Jalandhar. Now I am working in a Convent School, Jalandhar as a teacher. Pujya Mahant Ram Singh Ji Maharaj and Sant Jodh Singh Ji gave us their love, inspiration and guidance with which we all are living a successful life.

Mona Masih

Myself **Mona Masih** had come into **Mata Kartar Kaur Bal Kalyan Niketan** at Nirmal Dham, Model Town, Karnal in 2003 along with my two younger brothers. Myself was only 5 years old when I came to Bal Kalyan Niketan. Shri Amrik Chand Chawla 'Bau Ji' nurtured and provided us with all the facilities and needs of life as well as Education. With the blessings of 'Bau Ji' and Mahant Baba Ram Singh Ji Maharaj, today I am working as a teacher in Sant Nikka Singh Public School, Model Town, Karnal. I am very much thankful to respected 'Bau Ji' and Pujya Mahant Ram Singh Ji Maharaj for making my life so beautiful and successful. With their blessings I wish to serve the underprivileged persons of our society with full zeal & spirit.

पूनम शर्मा

मैं, **पूनम शर्मा** करनाल नगर की वासी हूँ। मेरी आर्थिक स्थिती ठीक न होने के कारण एक बुजुर्ग प्राणी जिनका नाम श्री धर्म पाल गुप्ता था। वह करनाल के शिव कृपा सेवा मंडल में निष्काम सेवा करते थे। उन्होंने दया करके मुझे वर्ष 2005 में माता करतार कौर बाल कल्याण निकेतन, निर्मल धाम में भेजा। मैं अपनी 3 बेटियों के साथ आई थी। यहाँ के मुखीया श्री संत अमरीक देव जी को मिलके शरण देने की विनती की। उन्होंने मुझे और मेरी बेटियों को अपने आश्रम में आश्रय दिया और मेरी तीनों बेटीयों को पढ़ाया और उनकी शादीयां भी अच्छे घरों में करवायीं। मेरी एक पुत्री का विवाह जालंधर (पं.) में तथा दूसरी का विवाह कुरूक्षेत्र में हुआ। दोनो बेटीयां अपनी घर गृहस्थी में सुखी और खुश हैं। अब मेरी छोटी बेटी ने भी एम. कॉम. पास कर ली है। श्री संत अमरीक देव जी ने मुझे और मेरे बच्चों को शरण देकर हम सब का जीवन संवार दिया। मैं श्री संत अमरीक देव जी की अति आभारी हूँ। इसके अतिरिक्त 'बाऊ जी' ने मुझे जीवन भर यहीं रहने की अनुमति एवं रसोई की सेवा देकर दे दी। 'बाऊ जी' का शरीर शांत होने पश्चात भी हमें पूज्य श्रीमान् महंत राम सिंह जी महाराज और संत जोध सिंह जी ने कोई कमी नहीं महसूस होने दी। मैं इन परोपकारी संतों की तह दिल से धन्यवादी हूँ।

बलविन्द्र कौर

मैं, **बलविन्द्र कौर** गाँव रंबा (करनाल) की रहने वाली हूँ। मैं और मेरा पति हमारी आर्थिक परिस्थती सही न होने के कारण निर्मल कुटीया, करनाल में सेवा करके अपना समय गुजार रहे थे। एक दिन श्रीमान् संत बाबा सरपंच जी ने हमें बुलाकर कहा कि आपको निर्मल धाम में रहकर निष्काम सेवा करनी चाहिए। उनका हुक्म मानते हुए हम अपनी पोती सिमरन कौर समेत वर्ष 2012 में इस आश्रम में आये। आश्रम के संस्थापक संत अमरीक देव जी ने हमारी कठिन परिस्थती को देखते हुए दया करके अपने आश्रम में आश्रय दे दिया। मेरी पोती को उन्होंने पढ़ाया लिखाया और आज वह अपनी आगामी शिक्षा प्राप्त करने के लिए लंदन गई हुई है। हम बाऊ जी द्वारा दी गयी इस अनमोल सहायता के सदैव ही अभारी रहेंगे। श्री संत अमरीक देव जी के स्वर्गवास होने उपरांत भी पूज्य महंत राम सिह जी ऋषिकेश वाले भी हमें पूरा प्रेम व सहयोग दे रहे हैं। हम 'बाऊ जी', श्रीमान् महंत राम सिंह जी महाराज एवं संत जोध सिंह जी तथा संस्था के सभी सदस्यों के बहुत अभारी हैं जिन्होंने हमें सभी सहूलतें देकर हमारा जीवन सफल व खुशहाल कर दिया। बहुत-बहुत धन्यवाद।

एक कार्यक्रम के पश्चात् पूज्य महाराज जी बाल कल्याण निकेतन के बच्चों को प्रोत्साहित करते हुए।

हरियाणा, पंजाब आदि में प्रमुख सत्संग भवन (निर्मल कुटिया)

Nirmal Ashram, Rishikesh

Chhoti Kutia, Karnal

Nirmal Kutia, Khokh-Kotli

Nirmal Kutia, Goraya

Nirmal Kutia, Thuha

Nirmal Kutia, Asarpur (Patiala)

Nirmal Kutia, Loh-Simbli

Nirmal Kutia, Bhotna-Bakhatgarh

Nirmal Kutia, Dhanaula

Nirmal Kutia, Lopey

Nirmal Kutia, Bhorhey (Nabha)

Nirmal Kutia, Nalvi

N K, Khatkar-Khurd (Banga)

Nirmal Kutia, Kutbanpur(Samana)

N K, Akhlaspur (Hoshiarpur)

Nirmal Sant Niwas, Mumbai

Nirmal Kutia, Jundla (Karnal)

N K, Begam Pura, Taraori (Karnal)

Nirmal Abinasi Kutia, Dhalawali (Gangoh)

N K, Chaudhary Majra (Nabha)

Nirmal Kutia, Bhoorey (Longowal)

Nirmal Kutia, Ropar

N K, Ghamrauda (Nabha)

Nirmal Kutia, Sangoha (Karnal)

पूज्य संत निक्का सिंह 'विरक्त' जी का जन्म स्थान

निर्मल कुटिया, सीहां दौद (पंजाब)

पूज्य श्रीमान् संत बाबा निक्का सिंह 'विरक्त' जी महाराज हुकमनामा साहिब जी की कथा करते हुए।

OUTSTANDING HUMANITARIAN SERVICES

Majestic view of Nirmal Ashram, Rishikesh (Established 1903)

NIRMAL ASHRAM HOSPITAL

Established on 13 April 1990, 120 Bedded Multi-speciality Hospital

NIRMAL ASHRAM DEEPMALA SCHOOL

Established on 1 January 1997, A Senior Secondary School affiliated with CBSE, New Delhi.

NIRMAL ASHRAM GYAN DAAN ACADEMY

Established in 2004, A Senior Secondary School affiliated with CBSE, New Delhi. Totally Free Education.

NIRMAL ASHRAM EYE INSTITUTE

Established in 2005, Super Speciality Eye Hospital